UG Sem - IV
MJC - 6 : Educational Psychology
Topic — Nature, Scope of Edu. Psy.

शिक्षा वस्तुतः मनुष्य के जीवन पद्धति (Style of life) में सार्थक परिवर्तन करने कि एक सात्विक प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति समाज का एक उपयोगी सदस्य बन जाता है। शिक्षा का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'एडुकेशन' (Education) है जो लैटिन भाषा के 'एडुकेर' (Educare) शब्द से उत्पन्न माना जाता है। इसका अर्थ है शिक्षित करना या पालन-पोषण करना। अतः इस विचारधारा के अनुसार बालकों में निहित शक्तियों या क्षमताओं को उत्तेजित (Stimulated) कर उन्हें सही दिशा में विकसित करने की प्रक्रिया ही शिक्षा है। बालकों में निहित क्षमताएँ दो प्रकार की हैं — (i) शारीरिक (Physical) तथा (ii) मानसिक (mental)। शिक्षा इन दोनों प्रकार के क्षमताओं के समुचित विकास का अवसर प्रदान करती है। अतः कह सकते हैं कि "शिक्षा वह प्रगतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति की मनोदैहिक क्षमताओं के पूर्ण विकास में सहायता करती है।"

"Education is a progressive process which help an individual to develop his psycho-Physical capacities fully."

Pestalozzi के अनुसार — "शिक्षा मनुष्य की समस्त क्षमताओं का स्वाभाविक, प्रगतिशील तथा विरोधहीन विकास है।"
पेस्टालॉजी

"Education is the natural, Progressive and harmonious development of all powers and faculties of the human beings."

John Dewey के अनुसार — "शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं का विकास है, जिनकी सहायता से वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करता हुआ अपनी सम्भावित उन्नति को प्राप्त करता है।"

"Education is the development of all those capacities in the individual which enable him to control his environment and fulfil possibility."

(2)

पढ़ना, लिखना और गणित सम्बन्धी ज्ञान (Reading, Writing & Arithmetic) करा देना ही निर्धारित हुआ। गुलामों को अपने उपयोग के अनुकूल बनाने के लिए शिक्षा के उद्देश्य को लिखना, पढ़ना तथा गणित तक ही सीमित रखा गया। मेकाले ने सर्वप्रथम इसकी बुनियाद रखी और बाद के अंग्रेज शिक्षाशास्त्रियों (Educationists) ने इसके पोषण के लिए विभिन्न समर्थक सूत्रों (formulas) को उपस्थित किया। अंग्रेजों के शासनकाल में इतना तो अवश्य लाभ हुआ कि वैज्ञानिक आविष्कारों (Scientific inventions) के सम्पर्क में आने का सुअवसर मिला और अपने आपको समझने तथा मूल्यांकन के तरीकों में हमारी वैज्ञानिक दृष्टि खुली और अपने प्राचीन सिद्धांतों को भी हमने वैज्ञानिक दृष्टि में विश्व के कसौटी पर कसना आरंभ कर दिया। John Dewey [ड्यूवी], Froebel [फ्रोबेल], Pestalozzi [पेस्टालॉजी] आदि यूरोपीय शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों ने हमारा मार्ग-दर्शन किया। हमने ब्रिटिशकालीन शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य (3Rs) को थोथा समझा और राष्ट्रपिता बापू के जीवन-दर्शन की छाया में 4Hs (Head, Hand, Heart & Health) अर्थात् बच्चों के मानसिक, कलात्मक, आध्यात्मिक तथा शारीरिक विकासों को शिक्षा का उद्देश्य माना।

शिक्षा के इस उद्देश्य (4Hs) के माध्यम से बालकों की क्षमताओं को समाज-उपयोगी धाराओं में मोड़ कर, ऐसे व्यक्तित्व-निर्माण पर जोर दिया गया, जिससे वे अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर आदर्श समाज के निर्माण तथा उसके अंग-प्रत्यंग को सफल बनाने में हाथ बटा सकें। इसके अतिरिक्त बालकों की वैयक्तिक भिन्नता (Individual difference) को ध्यान में रखकर 3As (Age, Ability & Aptitude) अर्थात् आयु, योग्यता तथा रुझान को महत्व दिया गया। इस प्रकार शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रमुख स्थान हो चला। मनोविज्ञान का प्रवेश होते ही शिक्षा के उद्देश्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए और बालकों का सर्वांगीण विकास शिक्षा का उद्देश्य बना। आज प्रजातन्त्रात्मक सामाजिक धारा के समक्ष शिक्षा के उद्देश्य में व्यक्ति के समाजीकरण (Socialization) का दायित्व स्वतः आ गया है।

बालकों की शारीरिक क्षमताओं को विकसित करके उन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ (Physically Sound) बनाना है। इसी तरह मानसिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा का उद्देश्य क्रमशः मानसिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को पूर्ण रूप से विकसित करके बालकों को मानसिक रूप से स्वस्थ (Mentally Sound) तथा नैतिक रूप से स्वस्थ (Morally Sound) बनाना है। अतएव, व्यक्तित्व के इन तीनों पहलुओं को पूर्ण रूप से विकसित करनेवाली प्रक्रिया ही शिक्षा है।

(ii) शिक्षा बालकों की समस्त क्षमताओं का स्वाभाविक, प्रगतिशील एवं विरोधहीन विकास है। शिक्षा ऐसे अनुकूल वातावरण को उपस्थित करती है जहाँ बालकों की शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक क्षमताओं का विकास विरोधहीन एवं पूर्ण रूप से संभव हो पाता है। (1)

शिक्षा के उद्देश्य (Aims and Objectives of Education)

शिक्षा वस्तुतः मनुष्य के जीवन-व्यवहारों में सफल होने की सामर्थ्य प्रदान करने की एक सात्विक प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति समाज का एक उपयोगी प्राणी बन सके। जैसे-जैसे युग-विशेष की सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ परिवर्तित होती है, वैसे-वैसे शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन होता है।

प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सफल जीवन के चार चरम निर्धारित हुए थे। जिसके संदर्भ में शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष प्रदान करना था। वैदिक काल के बाद ही शिक्षा धर्म-प्रधान हो चली और मुसलमानों के पदार्पण के बाद भी धर्म के निर्धारित दस लक्षणों में जीवन को नियोजित करना ही शिक्षा का उद्देश्य रहा। और, अंग्रेजों के पदार्पण के बाद शिक्षा के उद्देश्य-निर्धारण बहुत परिवर्तन हुआ। यूरोपीय भौतिकवादी (Materialist) सभ्यता में वैज्ञानिक अनुसन्धानों से भौतिकवादी शिक्षा को ही प्रश्रय मिला। इस प्रकार ब्रिटिशकाल में धर्म-प्रधान से अर्थ-प्रधान शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा।

अंग्रेजी शासनकाल में शिक्षा का उद्देश्य 3Rs अर्थात्

Crow & Crow के अनुसार — "शिक्षा व्यक्तिकरण तथा समाजीकरण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के पूर्ण विकसित कर समाजोपयोगी बनाती है।"

"Education is an individualizing and socializing process that furthers personal advancement as well as social living."

अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षा बालकों के सर्वांगीण एवं स्वाभाविक विकास के लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करनेवाली प्रक्रिया है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं का विकास है। लेकिन महात्मा गाँधी ने इन परिभाषाओं को समग्र (Comprehensive) नहीं माना है। उन्होंने शिक्षा का व्यवहार बहुत ही व्यापक अर्थ में किया है। उनके अनुसार सर्वांगीण विकास केवल शारीरिक तथा मानसिक विकास से ही नहीं बल्कि नैतिक विकास (moral development) से भी है। अतः शिक्षा वह प्रक्रिया है जो बालकों के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक तीनों पहलुओं के स्वाभाविक विकास में सहायता करती है। बापू के शब्दों में, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बालक तथा व्यक्ति के अन्तःस्थित सुन्दरम् विभूतियों का सर्वांगीण विकास— शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक।"

"By education I mean an all round development drawing out of the best in child and man— body, mind & spirit." — M. K. Gandhi

इन परिभाषाओं से शिक्षा संबंधी निम्नलिखित बातें सामने आती हैं —

(क) शिक्षा एक प्रक्रिया (Process) है जिससे बालकों में निहित क्षमताओं के विकास में सहायता मिलती है।

(ख) शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास है। सर्वांगीण विकास का तात्पर्य है शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक या आध्यात्मिक विकास। इस प्रकार शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया (tridimensional process) है — शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा। शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य